'मन की बात 2.0' की पांचवी कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (27.10.2019)

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार. आज दीपावली का पावन पर्व है. आप सबको दीपावली की बहुत बहुत शुभकामनाएं. हमारे यहां कहा गया है -

शुभम् करोति कल्याणं आरोग्यं धनसम्पदाम.

शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते.

कितना उत्तम सन्देश है. इस श्लोक में कहा है - प्रकाश जीवन में सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर के आता है, जो, विपरीत बुद्धि का नाश करके, सदबुद्धि दिखाता है. ऐसी दिव्यज्योति को मेरा नमन. इस दीपावली को याद रखने के लिए इससे बेहतर विचार और क्या हो सकता है कि हम प्रकाश को विस्तार दें, positivity का प्रसार करें और शत्रुता की भावना को ही नष्ट करने की प्रार्थना करें! आजकल दुनिया के अनेक देशों में दिवाली मनायी जाती है. विशेष बात यह कि इसमें सिर्फ भारतीय समुदाय शामिल होता है, ऐसा नहीं है बल्कि अब कई देशों की सरकारें, वहां के नागरिक, वहां के सामाजिक संगठन दिवाली को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं. एक प्रकार से वहां 'भारत' खड़ा कर देते हैं.

साथियो, दुनिया में festival tourism का अपना ही आकर्षण है. हमारा भारत, जो country of festivals है, उसमें festival tourism की भी अपार संभावनाएं हैं. हमारा प्रयास होना चाहिये कि होली हो, दिवाली हो, ओणम हो, पोंगल हो, बिहु हो, इन जैसे त्योहारों का प्रसार करें और त्योहारों की खुशियों में, अन्य राज्यों, अन्य देशों के लोगों को भी शामिल करें . हमारे यहां तो हर राज्य, हर क्षेत्र के अपने-अपने इतने विभिन्न उत्सव होते हैं - दूसरे देशों के लोगों की तो इनमें बहुत दिलचस्पी होती है. इसलिए, भारत में festival tourism बढ़ाने में, देश के बाहर रहने वाले भारतीयों की भूमिका भी बहुत अहम है.

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछली 'मन की बात' में हमने तय किया था कि इस दीपावली पर कुछ अलग करेंगे. मैंने कहा था - आइये, हम सभी इस दीपावली पर भारत की नारी शक्ति और उनकी उपलब्धियों को celebrate करें, यानी भारत की लक्ष्मी का सम्मान. और देखते ही देखते, इसके तुरंत बाद, social media पर अनगिनत inspirational stories का अम्बार लग गया. Warangal के Kodipaka Ramesh ने NamoApp पर लिखा कि मेरी मां मेरी शक्ति है. Nineteen Ninty में, 1990 में, जब मेरे पिताजी का निधन हो गया था, तो मेरी मां ने ही पांचों बेटों की जिम्मेदारी उठायी. आज हम पांचों भाई अच्छे profession में हैं . मेरी मां ही मेरे लिये भगवान है. मेरे लिये सब कुछ है और वो सही अर्थ में भारत की लक्ष्मी है.

रमेश जी, आपकी माताजी को मेरी प्रणाम. Twitter पर active रहने वाली गीतिका स्वामी का कहना है कि उनके लिये मेजर खुशबू कंवर 'भारत की लक्ष्मी है' जो bus conductor की बेटी है और उन्होंने असम Rifles की All - Women टुकड़ी का नेतृत्व किया था. कविता तिवारी जी के लिए तो भारत की लक्ष्मी, उनकी बेटी हैं, जो उनकी ताकत भी है. उन्हें गर्व है कि उनकी बेटी बेहतरीन painting करती है. उसने CLAT की परीक्षा में बहुत अच्छी rank भी हासिल की है. वहीं मेघा जैन जी ने लिखा है कि Ninety Two Year की, 92 साल की एक बुजुर्ग महिला, वर्षों से ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को मुफ्त में पानी पिलाती है. मेघा जी, इस भारत की लक्ष्मी की विनम्रता और करुणा से काफी प्रेरित हुई हैं. ऐसी अनेक कहानियां लोगों ने share की हैं. आप जरुर पढ़िये, प्रेरणा लीजिये और खुद भी ऐसा ही कुछ अपने आस-पास से share कीजिये और मेरा, भारत की इन सभी लक्ष्मियों को आदरपूर्वक नमन है .

मेरे प्यारे देशवासियो, 17वीं शताब्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सांची होनम्मा (Sanchi Honnamma), उन्होंने, 17वीं शताब्दी में, कन्नड़ भाषा में, एक कविता लिखी थी. वो भाव, वो शब्द, भारत की हर लक्ष्मी, ये जो हम बात कर रहे हैं ना! ऐसा लगता है, जैसे कि उसका foundation 17वीं शताब्दी में ही रच दिया गया था. कितने बढ़िया शब्द, कितने बढ़िया भाव और कितने उत्तम विचार, कन्नड़ भाषा की इस कविता में हैं.

पैन्निदा पर्मेगोंडनू हिमावंतनु,
पैन्निदा भृगु पर्चिदानु
पैन्निदा जनकरायनु जसुवलीदनू
(Penninda permegondanu himavantanu.
Penninda broohu perchidanu
Penninda janakaraayanu jasuvalendanu)

अर्थात हिमवन्त यानी पर्वतराजा ने अपनी बेटी पार्वती के कारण, ऋषि भृगु ने अपनी बेटी लक्ष्मी के कारण और राजा जनक ने अपनी बेटी सीता के कारण प्रसिद्धि पायी. हमारी बेटियां, हमारा गौरव हैं और इन बेटियों के महात्मय से ही, हमारे समाज की, एक मजबूत पहचान है और उसका उज्ज्वल भविष्य है .

मेरे प्यारे देशवासियो, 12 नवंबर, 2019 - यह वो दिन है, जिस दिन दुनिया भर में, श्री गुरुनानक देव जी का 550वां प्रकाश उत्सव मनाया जाएगा. गुरुनानक देव जी का प्रभाव भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व मे है. दुनिया के कई देशों में हमारे सिख भाई-बहन बसे हुए हैं जो गुरुनानकदेव जी के आदर्शों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं. मैं वैंकूवर (Vancouver) और तेहरान (Tehran) में गुरुद्वारों की अपनी यात्राओं को कभी नहीं भूल सकता. श्री गुरुनानकदेव जी के बारे में ऐसा बहुत कुछ है

जिसे मैं आपके साथ साझा कर सकता हूं, लेकिन इसके लिए मन की बात के कई एपिसोड लग जाएंगे. उन्होंने, सेवा को हमेशा सर्वोपरि रखा. गुरुनानकदेव जी मानते थे कि निस्वार्थ भाव से किए गए सेवा कार्य की कोई क़ीमत नहीं हो सकती. वे छुआ-छूत जैसे सामाजिक बुराई के खिलाफ मजबूती के साथ खड़े रहे. श्री गुरुनानक देव जी ने अपना सन्देश, दुनिया में, दूर-दूर तक पहुंचाया. वे अपने समय में सबसे अधिक यात्रा करने वालों में से थे. कई स्थानों पर गये और जहां भी गये, वहां, अपनी सरलता, विनम्रता, सादगी - उन्होंने सबका दिल जीत लिया. गुरुनानक देव जी ने कई महत्वपूर्ण धार्मिक यात्राएं की, जिन्हें 'उदासी' कहा जाता है. सद्भावना और समानता का सन्देश लेकर, वे, उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम - हर दिशा में गये, हर जगह लोगों से, संतों और ऋषियों से मिले. माना जाता है कि असम के सुविख्यात सन्त शंकरदेव भी उनसे प्रेरित हुए थे. उन्होंने हरिद्वार की पवित्र भूमि की यात्रा की. काशी में एक पवित्र स्थल, 'गुरुबाग गुरुद्वारा' है - ऐसा कहा जाता है कि श्री गुरुनानक देव जी वहां रुके थे. वे बौद्ध धर्म से जुड़ी 'राजगीर' और 'गया' जैसे धार्मिक स्थानों पर भी गए थे. दक्षिण में गुरुनानक देव जी, श्रीलंका तक की यात्रा की. कर्नाटका में बिदर की यात्रा के दौरान, गुरुनानक देव जी ने ही, वहां पानी की समस्या का समाधान किया था. बिदर में 'गुरुनानक जीरा साहब' नाम का एक प्रसिद्ध स्थल है जो गुरुनानक देव जी की- हमें याद भी दिलाता है, उन्हीं को ये समर्पित है. एक उदासी के दौरान, गुरुनानक जी ने उत्तर में, कश्मीर और उसके आस-पास के इलाके की भी यात्रा की. इससे सिख अनुयायियों और कश्मीर के बीच काफी मजबूत संबंध स्थापित हुआ. गुरुनानक देव जी तिब्बत भी गये, जहां के लोगों ने, उन्हें, 'गुरु' माना. वे उज्बेकिस्तान में भी पूजनीय हैं, जहां, उन्होनें, यात्रा की थी. अपनी एक उदासी के दौरान, उन्होंने, बड़े पैमाने पर इस्लामिक देशों की भी यात्रा की थी, जिसमें, Saudi Arab, Iraq और Afghanistan भी शामिल हैं. वे लाखों लोगों के दिलों में बसे, जिन्होंने पूरी श्रद्धा के साथ उनके उपदेशों का अनुसरण किया और आज भी कर रहे हैं. अभी कुछ दिन पहले ही, करीब 85 देशों के Eighty Five Countries के राजदूत, दिल्ली से अमृतसर गये थे. वहां उन्होंने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के दर्शन किये और ये सब गुरुनानक देव जी के 550वें प्रकाशपर्व के निमित्त हुआ था. वहां इन सारे राजदूतों ने Golden Temple के दर्शन तो किये ही, उन्हें, सिख परम्परा और संस्कृति के बारे में भी जानने का अवसर मिला. इसके बाद कई राजदूतों ने Social Media पर वहां की तस्वीरें साझा की. बड़े गौरवपूर्वक अच्छे अनुभवों को भी लिखा. मेरी कामना है कि गुरु नानक देव जी के 550वां प्रकाश पर्व हमें उनके विचारों और आदर्शों को अपने जीवन में उतारने की और अधिक प्रेरणा दें. एक बार फिर मैं शीश झुकाकर गुरुनानक देव जी को नमन करता हूं.

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मुझे विश्वास है कि 31 अक्तूबर की तारीख़ आप सबको अवश्य याद होगी. यह दिन भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म जयंती का है जो देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाले महानायक थे. सरदार पटेल में जहां लोगों को एकजुट करने की अद्भुत क्षमता थी, वहीं, वे उन लोगों के साथ भी तालमेल बिठा लेते थे जिनके साथ वैचारिक मतभेद होते थे. सरदार पटेल बारीक़-से-बारीक़ चीजों को भी बहुत गहराई से देखते थे, परखते थे . सही मायने में, वे 'Man of detail' थे . इसके साथ ही वे संगठन कौशल में भी निपुण थे. योजनाओं को तैयार करने और रणनीति बनाने में उन्हें महारत हासिल थी. सरदार साहब की कार्यशैली के विषय में जब पढ़ते हैं, सुनते हैं, तो पता चलता है कि उनकी planning कितनी जबरदस्त होती थी. 1921 में Nineteen Twenty One में अहमदाबाद में कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल होने के लिए देशभर से हजारों की संख्या में delegates पहुंचने वाले थे. अधिवेशन की सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी सरदार पटेल पर थी. इस अवसर का उपयोग उन्होंने शहर में पानी supply के Network को भी सुधारने के लिए किया. यह सुनिश्चित किया कि किसी को भी पानी की दिक्कत न हो. यहीं नही, उन्हें, इस बात की भी फ़िक्र थी कि अधिवेशन स्थल से किसी delegate का सामान या उसके जूते चोरी न हो जाएं और इसे ध्यान में रखते हुए सरदार पटेल ने जो किया वो जानकर आपको बहुत आश्चर्य होगा. उन्होंने किसानों से संपर्क किया और उनसे खादी के बैग बनाने का आग्रह किया. किसानों ने बैग बनाये और प्रतिनिधियों को बेचे. इन bags में जूते डाल, अपने साथ रखने से delegates के मन से जूते चोरी होने की tension ख़त्म हो गई. वहीं दूसरी तरफ खादी की बिक्री में भी काफ़ी वृद्धि हुई. संविधान सभा में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के लिए हमारा देश, सरदार पटेल का सदैव कृतज्ञ रहेगा. उन्होंने मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया, जिससे, जाति और संप्रदाय के आधार पर होने वाले किसी भी भेदभाव की गुंजाइश न बचे.

साथियो, हम सब जानते है कि भारत के प्रथम गृहमंत्री के रूप में सरदार वल्लभभाई पटेल ने, रियासतों को, एक करने का, एक बहुत बड़ा भगीरथ और ऐतिहासिक काम किया. सरदार वल्लभभाई की ये ही विशेषता थी जिनकी नज़र हर घटना पर टिकी थी. एक तरफ उनकी नज़र हैदराबाद, जूनागढ़ और अन्य राज्यों पर केन्द्रित थी वहीं दूसरी तरफ उनका ध्यान दूर-सुदूर दक्षिण में लक्षद्वीप पर भी था. दरअसल, जब हम सरदार पटेल के प्रयासों की बात करते हैं तो देश के एकीकरण में कुछ खास प्रान्तों में ही उनकी भूमिका की चर्चा होती है. लक्षद्वीप जैसी छोटी जगह के लिए भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. इस बात को लोग शायद ही याद करते हैं. आप भली-भांति जानते है कि लक्षद्वीप कुछ द्वीपों का समूह है. यह भारत के सबसे खुबसूरत क्षेत्रों में से एक है. 1947 में भारत विभाजन के तुरंत बाद हमारे पड़ोसी की नज़र लक्षद्वीप पर थी और उसने अपने झंडे के साथ जहाज भेजा था. सरदार पटेल को जैसे ही इस बात की जानकारी मिली उन्होंने बगैर समय गंवाये, जरा भी देर किये बिना, तुरंत, कठोर कार्यवाही शुरू कर दी. उन्होंने Mudaliar brothers, Arcot Ramasamy Mudaliar

(शेष पृष्ठ 30 पर)